

	(ii) इन प्रयासों से हाशिए पर खड़े लोगों, जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं महिलाओं सहित सभी वर्गों का संवर्द्धन करने की उम्मीद है।	
19	सामाजिक परिवर्तन: सामाजिक परिवर्तन निरंतर रूप से आगे बढ़ता रहता है सामाजिक आंदोलन: सामाजिक आंदोलन किसी विशिष्ट उद्देश्य की ओर निर्देशित होते हैं।	1+1
20	(i) यह बहुत से व्यक्तियों को उत्पादन प्रक्रिया से अलग कर देती है। (ii) उनके अपने देशीय कृषि ज्ञान को निरर्थक बना देती है। (iii) यह मूलरूप से अभिजात मर्दों का उत्पादन करती है। जैसे फूल (कट फ्लावर), अंगूर, अंजीर तथा अनार। (iv) पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित नहीं होती। (कोई दो)	1+1
21	(i) एक व्यक्ति खान में सप्ताह में अधिक से अधिक कितने घंटे कार्य कर सकता है। (ii) अतिरिक्त घंटे तक काम करने पर उसे अलग से पैसा दिया जाना चाहिए। (iii) सुरक्षा नियम। (कोई दो)	1+1
22	प्रजनन शक्ति स्तर प्रतिस्थापन दर से नीचा रहता है। जैसे, जापान, रूस, इटली एवं पूर्वी युरोप। (कोई दो देश)	1 + 1
23	(i) आर्थिक परिवर्तन में तीव्रता (ii) नए-नए रोजगार के अवसर तैयार किए जिनके लिए कोई जातीय नियम नहीं थे। (iii) नगरीकरण और शहरों में सामूहिक रहन-सहन की परिस्थितियों ने सामाजिक अंतःक्रिया के जाति-पृथक्कृत स्वरूपों का अधिक समय तक चलना मुश्किल कर दिया। (iv) आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीय व्यक्तिवाद और योग्यतातंत्र अर्थात् योग्यता को महत्व देने के उदार विचारों से आकर्षित हुए और उन्होंने अधिक अतिवादी जातीय व्यवहारों को छोड़ना प्रारंभ कर दिया। (v) औद्योगीकरण कुछ एक स्थानों पर जबरदस्त समानता लाता है, उदाहरण के लिए रेलगाड़ियों, बसों और साइबर कैफे में जातीय भेदभाव के महत्त्व का ना होना। (vi) हालाँकि, इस संसार में सामाजिक असमानताएँ कम हो रही हैं लेकिन आर्थिक या आय से संबंधित असमानताएँ उत्पन्न हो रही हैं। बहुधा-सामाजिक और आय संबंधी असमानता परस्पर एक-दूसरे पर छा जाती है। (vii) उदाहरण के लिए अच्छे वेतन वाले व्यवसायों जैसे मेडीसिन, कानून अथवा पत्रकारिता में उच्च जाति के लोगों का वर्चस्व आज भी बना हुआ है। (कोई दो बिंदु) (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	1+1
24	(क) (i) सामुदायिक पहचान, जन्म तथा अपनेपन पर आधारित होती है, न कि किसी अर्जित योग्यता या 'उपलब्धि' के आधार पर। (ii) अत्यंत सुरक्षित एवं संतुष्ट (iii) सर्वव्यापी (iv) आकस्मिक और शर्त रहित (कोई दो)	1+1

	अथवा (ख) भारत में क्षेत्रवाद भारत की भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता के कारण पाया जाता है। इसे विशेष क्षेत्रों में पहचान चिह्नों के भौगोलिक संकेन्द्रण के कारण भी प्रोत्साहन मिलता है और क्षेत्रीय वंचन (deprivation) का भाव अग्नि में घी का काम करता है।	2
25	मातृस्थानिक- नवविवाहित जोड़ा वधु के माता-पिता के साथ रहता है। पितृस्थानिक- नवविवाहित जोड़ा वर के माता-पिता के साथ रहता है।	1+1
	खंड -ग	
26	(i) आदिवासी लोग सदा इतने पीड़ित समूह नहीं थे- मध्य भारत में अनेक गोंड राज्य रहे हैं जैसे, गढ़ मंडला या चाँदा (ii) मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भारत के तथा कथित राजपूत राज्यों में से अनेक रजवाड़े वास्तव में स्वयं आदिवासी समुदायों में स्तरीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही उत्पन्न हुए। (iii) आदिवासी लोग अक्सर अपनी आक्रामक क्षमता और स्थानीय सैन्य दलों में अपनी सेवाओं के माध्यम से मैदानी इलाकों के लोगों पर अपने प्रभुत्व का प्रयोग करते हैं (iv) वे कुछ विशेष प्रकार की वस्तुओं का व्यापार भी करते थे जिसके अंतरगत वे वन्य उत्पाद, नमक और हाथी बेचा करते थे। (v) जब वन्य संसाधनों और खनिजों का दोहन करने और सस्ते श्रमिकों की भर्ती करने के लिए पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का अभियान चला तो उसने काफी समय पहले जनजातीय समाजों को मुख्यधारा वाले समाज के संपर्क में ला दिया। (कोई चार)	1+1+1+1
27	(क) (i) हमारे देश में स्थापित संसदीय, विधि एवं शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है। (ii) यहाँ तक कि हमारा सड़कों पर बाएँ चलना भी ब्रिटिश अनुकरण है। (iii) सड़क के किनारे रेहड़ी व गाड़ियों पर हमें 'ब्रेड- ऑमलेट' और 'कटलेट' जैसी खाने की चीजें आमतौर पर मिलती हैं। (iv) एक प्रसिद्ध बिस्कुट निर्माता कंपनी का नाम भी 'ब्रिटेन' से संबद्ध है। (v) अनेक स्कूलों में 'नेक-टार्ड' पोशाक का एक अनिवार्य हिस्सा होता है। (कोई चार) (कोई अन्य उपयुक्त बिंदु)	4
	अथवा (ख) (i) उपयोग में आनेवाली अंग्रेजी मात्र भाषा नहीं है बल्कि हम पाते हैं कि बहुत से भारतीयों ने अंग्रेजी भाषा में उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ भी की हैं। (ii) अंग्रेजी के ज्ञान के कारण भारत को भूमंडलीकृत अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में एक विशेष स्थान प्राप्त है। (iii) अंग्रेजी आज भी विशेषाधिकारों की द्योतक है। (iv) जिसे अंग्रेजी का ज्ञान नहीं होता है उसे रोज़गार के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। (v) अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अनेक वंचित समूहों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है। अंग्रेजी के ज्ञान से अब दलितों के लिए भी अवसरों के द्वार खुल गए हैं। (कोई चार)	1+1+1+1
28	राजा राममोहनराय ने बंगाल में 'सती' प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया। (i) ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में की। (ii) यह पहला स्त्री संबंधी मुद्दा था जिस पर आम लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया था।	2+2

	(iii) राममोहन राय के विचारों में पाश्चात्य तर्कसंगति और भारतीय पारंपरिकता का सुंदर मिश्रण था। रानाडे- (i) एम. जी. रानाडे द्वारा लिखित ग्रंथो 'दि टेक्स्टस ऑफ़ द हिंदू लॉ ऑन द लॉफुलनेस ऑफ़ द रीमेरिज ऑफ़ विडोज' और 'वेदिक अथॉरिटीज फॉर विडो मैरिज' में विधवा विवाह के लिए शास्त्रीय स्वीकृति का विशद विवेचन किया गया। (ii) बाम्बे प्रेसिडेंसी में वहाँ के अग्रणी सुधारक रानाडे ने विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए आंदोलन चलाया। जोतिबा फुले- (i) 'सत्यशोधक समाज' नामक संस्था की स्थापना की और उसके माध्यम से सत्य की खोज पर बल दिया। (ii) जातीय और लैंगिक अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। सर सैयद अहमद खान- (i) इस्लाम में सामाजिक सुधारों के आंदोलन का नेतृत्व किया। (ii) वह चाहते थे कि लड़कियों को शिक्षित तो किया जाए पर घर की चारदीवारी के भीतर ही। (iii) उनका विचार था कि उनके लिए अलग किस्म की पाठ्यचर्या हो जिसके तहत धार्मिक उसूलों की शिक्षा दी जाए, घर- गृहस्थी चलाने की कलाओं और शिल्पों तथा बच्चों के पालन-पोषण का प्रशिक्षण दिया जाए। (कोई दो समाज सुधारक)	
29	(i) निर्योग्यता/अक्षमता को एक जैविक कमज़ोरी माना जाता है। (ii) जब कभी किसी अक्षम व्यक्ति के समक्ष कई समस्याएँ खड़ी होती हैं तो यह मान लिया जाता है कि ये समस्याएँ उसकी बाधा या कमज़ोरी के कारण ही उत्पन्न हुई हैं। (iii) अक्षम व्यक्ति को हमेशा शिकार यानी पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। (iv) यह माना जाता है कि निर्योग्यता उस निर्योग्य व्यक्ति के अपने प्रत्यक्ष ज्ञान से जुड़ी है। (v) निर्योग्यता का मूलभाव ही यह दर्शा देता है कि निर्योग्य व्यक्तियों को सहायता की आवश्यकता है। (कोई चार)	1+1+1+1
30	(i) एम.एन. श्रीनिवास (ii) संस्कृतीकरण का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें निम्न जाति या जनजाति या अन्य समूह उच्चजातियों विशेषकर, द्विज जाति की जीवन पद्धति, अनुष्ठान, मूल्य, आदर्श, विचारधाराओं का अनुकरण करते हैं। विसंस्कृतीकरण - जहाँ गैर संस्कृतीकरण जातियाँ प्रभुत्वशाली थीं, वहाँ की संस्कृति को इन जातियों ने प्रभावित किया। कई सदियों तक 19वीं शताब्दी के तीन चौथाई भाग तक पारसियों को प्रभुत्वशाली माना जाता था।	1 3
31	जब ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत में आए, तो उन्होंने कई क्षेत्रों में इन स्थानीय ज़मींदारों द्वारा ही काम चलवाया। उन्होंने ज़मींदारों को संपत्ति के अधिकार भी दे दिए। ब्रिटिश लोगों के लिए काम करते हुए उन्हें ज़मीन पर पहले से ज़्यादा नियंत्रण मिला। ज़मींदारी व्यवस्था का एक परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश काल के दौरान कृषि उत्पादन कम होने लगा क्योंकि औपनिवेशिकों ने कृषि भूमि पर बहुत बड़ा टैक्स लगा दिया था। रैयतवाड़ी व्यवस्था भू प्रभंध, (तेलुगु में रैयत का अर्थ है - कृषक) इस व्यवस्था में ज़मींदार के स्थान पर वास्तविक कृषक (वे खद बहुधा ज़मींदार होते थे न कि कृषक) ही टैक्स चुकाने के लिए ज़िम्मेदार होते थे। इसमें टैक्स का भार कम होता था और कृषकों को कृषि में निवेश करने के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता था। (अन्य कोई व्यवस्था जैसे महलवारी)	2+2
32	(i) भारत में बहुत कम लोगों के पास सुरक्षित रोज़गार है। (ii) यहाँ तक कि छोटी संख्या के स्थायी सुरक्षित रोज़गार भी अनबुंधित कामगारों के कारण असुरक्षित होते जा रहे हैं। (iii) सरकारी रोज़गार कम होता जा रहा है।	4

	(iv) बहुसंख्यक लोग गाँव में ही रहते हैं (69 प्रतिशत, 2011 की जनगणना के अनुसार) (v) उनका जीवन कृषि अथवा उससे संबंधित व्यवसायों से चलता है। (vi) इसका अर्थ यह हुआ कि बहुत से भारतीयों के लिए भूमि उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है। (vii) लेकिन भूमि न तो केवल उत्पादन का साधन है और न ही केवल संपत्ति का एक प्रकार। (viii) न ही केवल कृषि है जो कि उनके जीविका का एक प्रकार है। यह जीने का एक तरीका भी है। (ix) हमारी बहुत सी सांस्कृतिक रस्मों और उनके प्रकार में कृषि की पष्ठभूमि होती है। (कोई चार)	
	खंड - घ	
33	(क) वहाँ कार्यशील लोगों का अनुपात काम न करने वालों की तुलना में अधिक बड़ा होता है। (ख) 1961 की तुलना में 2026 (प्रक्षेपित) में पराश्रितता अनुपात (0-14 और 60+) गिरता जायेगा। कार्यशील जनसंख्या (15-60) का अनुपात 1961 की तुलना में 2026 (प्रक्षेपित) बढ़ता जायेगा (ग) गिरता हुआ पराश्रितता अनुपात आर्थिक संवर्द्धि और समृद्धि का स्रोत बन सकता है क्योंकि वहाँ कार्यशील लोगों का अनुपात काम न करने वालों की तुलना में अधिक बड़ा होता है। (दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 33 का उत्तर एक समान है)	2+2+2
34	(क)(i) पूर्वी मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ के मैदानी इलाके में चमारों के सतनामी आंदोलन। (ii) पंजाब के आदि धर्म आंदोलन। (iii) महाराष्ट्र के महार आंदोलन। (iv) आगरा के जाटवों की सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता। (v) दक्षिण भारत के ब्राह्मण-विरोधी आंदोलन। (कोई दो उदाहरण) (कोई अन्य उपयुक्त आंदोलन) (ख) (i) आर्थिक शोषण। (ii) राजनैतिक दबाव। (iii) मानव के रूप में पहचान प्राप्त करने का संघर्ष है। (iv) यह आत्मविश्वास पाने का संघर्ष है। (v) यह आत्मनिर्णय का स्थान पाने का संघर्ष है। (vi) यह अस्पृश्यता द्वारा उपलब्धित कलंक को समाप्त करने का संघर्ष है। (vii) इसे स्पर्श के लिए संघर्ष कहा जाता है। (कोई चार)	1+1 1+1+1+1
35	(i) अनेक विशिष्ट राष्ट्रों का स्थापना साझे - धर्म, भाषा, नृजातीयता, इतिहास अथवा क्षेत्रीय संस्कृति जैसी साझी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संस्थाओं के आधार पर की गई है। (ii) लेकिन किसी ऐसे पारिभाषिक लक्षणों को निर्धारित करना अथवा उन विशेषताओं का पता लगाना कठिन है जो एक राष्ट्र में होनी ही चाहिए। (iii) प्रत्येक सभ्य कसौटी के लिए अनेक अपवाद और विरोधी उदाहरण पाए जाते हैं। (iv) उदाहरण के लिए ऐसे बहुत से राष्ट्र हैं जिनकी अपनी एक साझा या सामान्य भाषा, धर्म, नृजातीयता आदि नहीं हैं। (v) दूसरी ओर ऐसी अनेक भाषाएँ, धर्म या नृजातियाँ हैं जो कई राष्ट्रों में पाई जाती हैं। (vi) लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि यह सभी मिलकर एक एकीकृत राष्ट्र का निर्माण करते हैं उदाहरण के लिए, सभी अंग्रेजी भाषी लोग या सभी बौद्धधर्मावलंबी। (अन्य उपयुक्त उदाहरण)	6